विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत   दिनांक 20-02-2021

वर्ग पंचम   शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

1. **प्रथम पुरुष को अन्य पुरुष भी कहा जाता है |प्रथम पुरुष में युष्मद् शब्द के कर्त्ताओं तथा अस्मद् शब्द के कर्त्ताओं को छोड़ कर अन्य जितने भी कर्त्ता होते है , वे सब प्रथम पुरुष के अंतर्गत आते हैं | जैसे- स: , राम: , बालक: , मोहन:, सीता , बालिका आदि |**

2. **मध्यम पुरुष में केवल युष्मद् शब्द के तीन कर्त्ता (त्वम् , युवाम्, यूयम्) का प्रयोग होता है | इसके अतिरिक्त कोई अन्य कर्त्ता प्रयुक्त नही होता है |**

3. उत्तम पुरुष में केवल अस्मद् शब्द के तीन कर्त्ता (अहम् ,आवाम्, वयम्) का प्रयोग होता है | इसके अतिरिक्त कोई अन्य कर्त्ता प्रयुक्त नहीं होता हैं |

4. प्रत्येक लकार के तीन पुरुष होते है तथा प्रत्येक पुरुष के तीन वचन होते है | इस प्रकार प्रत्येक धातु के नौ रुप होते हैं |

5. तालिका में लट् लकार के माध्यम से अनुवाद को समझाया गया है | अन्य लकारों में ऊपर दिये गए नियमों के अनुसार अनुवाद कर सकते हैं |

पाँच लकारों के उदाहरण -

1. लट्लकार -रमा पाठं पठति |

2. लड्.लकार-यूयम् अगच्छत |

3. लृटलकार - ते पठिष्यन्ति |

4. लोट्लकार - त्वं सत्यं वद |

5. बिधिलिंग - मानव: प्रतिदिनं ईश्वरं स्मरेत् |

हिंदी के सरल वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद के उदाहरण -

हिंदी वाक्य   संस्कृत अनुवाद

मेरे मित्र ने पुस्तक पढ़ी । मम मित्रं पुस्तकं अपठत् ।

वे लोग घर पर क्या करेंगे ।   ते गृहे किम करिष्यन्ति ।

यह गाय का दूध पीता है ।सः गोदुग्धम पिवति ।

हम लोग विद्यालय जाते है । वयं विद्यालयं गच्छाम: ।

तुम शीघ्र घर जाओ । त्वं शीघ्रं गृहम् गच्छ ।

हमें मित्रों की सहायता करनी चाहिये । वयं मित्राणां सहायतां कुर्याम ।

विवेक आज घर जायेगा । विवेकः अद्य गृहं गमिष्यति ।

देशभक्त निर्भीक होते हैं | देशभक्ता: निर्भीका: भवन्ति |

सिकन्दर कौन था ? अलक्षेन्द्र: क: आसीत् ?

राम स्वभाव से दयालु हैं | राम: स्वभावेन दयालु: अस्ति |

वृक्ष से फल गिरते हैं | वृक्षात् फलानि पतन्ति |

शिष्य ने गुरु से प्रश्न किया | शिष्य: गुरुं प्रश्नम् अपृच्छ्त् |

मैं प्रतिदिन स्नान करता हूँ | अहं प्रतिदिनम् स्नानं कुर्यामि |

मैं कल दिल्ली जाऊँगा | अहं श्व: दिल्लीनगरं गमिष्यामि |

प्रयाग में गंगा-यमुना का संगम है |प्रयागे गंगायमुनयो: संगम: अस्ति |

वाराणसी की पत्थर की मूर्तियाँ प्रसिद्ध हैं | वाराणस्या: प्रस्तरमूर्त्तय: प्रसिद्धा: |

अगणित पर्यटक दूर देशो से वाराणसी आते हैं |

अगणिता: पर्यटका: सुदूरेभ्य: देशेभ्य: वाराणसी नगरिम् आगच्छन्ति |

यह नगरी विविध कलाओ के लिए प्रसिद्‌ध हैं | इयं नगरी विविधानां कलानां कृते प्रसिद्‌धा अस्ति |